TITLE: Re: Census of Biharis living outside the state

श्री राजीव प्रताप रूडी (सारण): धन्यवाद सभापति महोदय। मैं हमेशा की तरह बिहार की चर्चा करूंगा। बिहार के 52 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे हैं, जो बेरोजगारी और भुखमरी के कगार पर हैं। महोदय, जब-जब सरकारें हिलती हैं तो वहां एक जातिगत जनगणना शुरू कर दिया जाता है। कभी पिछड़ा को अति पिछड़ा में तो कभी दलित को महादलित में बांट दिया जाता है। आज बिहार के चार करोड़ लोग गरीबी की मार के कारण पूरे भारतवर्ष में चले गए हैं। पता नहीं उनको इस आरक्षण से लाभ हुआ या नहीं? मेरा सरकार से अनुरोध है कि बिहार के चार करोड़ लोग जो बाहर चले गए हैं, वे किस जाति के हैं, वे कब गए और वे क्या-क्या काम करते हैं, उसका एक सेंसस किया जाए।

महोदय, इसके साथ-साथ मेरा एक और अनुरोध है। देश के सभी सांसद यहां बैठे हैं और कई सारे सांसद, चाहे वे आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, राजस्थान या मध्य प्रदेश के हों, कई सारे राज्य बिहार से अमीर हैं। खासकर के पंजाब में, हमारे मित्र यहां बोल रहे थे, चाहे वे गुजरात में गए हों, यहां तमिलनाडु की सुमति जी बैठी हुई हैं, हमारे मजदूर वहां जाते हैं, उनकी मौत हो जाती है। सांसदों के ऊपर जिम्मेदारी होती है कि डेड बॉडी को वहां से मंगाया जाए तो मेरा यह अनुरोध होगा कि सभी राज्य सरकारों को यह निर्देशित किया जाए वे अपने यहां एक ऐसा कानून बनाएं, जिससे बिहार के जो गरीब मजदूर वहां मरते हैं, उनके शरीर को सम्मानपूर्वक उनके अपने गांव तक पहुंचाया जा सके । यह हमारी मांग है।